९५

ड़ाक बंगला

डाक बंगला

कथावस्तु -

दरअसल कमलेश्वरजी के लघु-अुपन्यास 'डाक बंगला' की कहानी अिरा नामक अेक युवती की प्रेम कहानी है, जिसको तिलक नामक अेक पात्र बयान कर रहा है। अिरा अेक अैसी बदनसीब युवती है जिसने अपनी ज़िन्दगी में चार पुरुषों से प्रेम किया। वे चार पुरुष हैं - मेजर सोलंकी, बतरा, डाक्टर और बिमल। मगर अिन चारों में से किसी अेक ने भी अुसको अंतिम प्यार नहीं दिया, जिसके लिअे वह ज़िन्दगीभर तडपती रही, भटकती रही। जो भी अिरा के जीवन में आया, अुसने अुसके साथ खिलवाड़ ही किया।

कश्मीर सफ़र के दौरान अिरा की तिलक से मुलाक़ात हुअी, जहाँ

पर अुसने अपनी दर्दभरी दास्तान तिलकको सुना दी थी और अुसी कहानी को तिलक यहाँ पर पेश कर रहा है। वास्तव में 'ड़ाक बंगला' की कहानी कहीं भी घटित हो सकती है। कश्मीर यात्रा के दौरान तिलक से अचानक अिरा की मुलाकात हुअी थी। अिरा कश्मीर के अेक होटल में ठहरी हुअी थी। तिलक ने भी अेक रात आडू के ड़ाक बंगले में और अेक रात लिद्दरवट के ड़ाक बंगले में गुजारनेका प्रोग्राम बनाया था। धीरे धीरे अिरा और तिलक में निकटता बढती गयी। अेक दिन अिराने तिलक के सामने अपना पुराना किस्सा रखा।

अिन दिनों अिरा और अुसका पति दोनों आसाम की अेक बस्ती में रहा करते थे जो कि बहुत ही खतरनाक थी। खिड़की पर खड़े होते हुअे ड़र लगता था। ना जाने कब गोली शीशे के पार से छाती में घुस जाअे। अैसी अचानक अिरा के पति की मौत हुअी थी। किसी विद्रोहीने अुसको सरकारी अफ़सर समझकर गोली मार दी थी। अुसके पति डाक्टरी का पेशा किया करते थे। रात बिरात भी अुसको जाना पड़ता था।

अेक दिन सोलंकी अिरा से मिलने आया, तो अुसको देखकर तिलक को ताज्जुब हुआ। मगर खुद अिरानेही बता दिया - 'अरे । ये मिस्टर तिलक हैं, और आप मेजर सोलंकी।' आगे चलकर अिरा और सोलंकी दोनों में निकटता बढ़ती है। तिलक, सोलंकी और अिरा अेक शाम लिद्दरवट के ड़ाक-बंगलेमें गुजारते हैं। अिरा सोलंकी के साथ कुछ देर तक घूमने चली जाती है। अिन दोनों को अैसी हालत में देखकर तिलक चुपचाप देखता ही रह जाता है। अिरा जब घूमकर लौट आयी तब वह खोयी खोयी सी खड़ी रही। अैसे में वह तिल को बहुत अच्छी लगी थी। लेकिन अुस वक्त तिलक का मन अिरा की हर भावना से विद्रोह करना चाहता था। लिद्दरवट के ड़ाक बंगले के वे दोनों

मुसाफ़िर, जिनके साथ दो औरतें भी थीं, लौट पड़े थे। उनमें अेक फ़ौजी आदमी था। शुरू में सोलंकी और फ़ौजी आदमी में गरमागरम बातें हुअीं मगर जब उसने अिरा को देखा तो अेकदम ठंडा पड़ गया और बोला, - "ओह....समझा। बाअी..... तुम अिधर अिस कमरे में रात गुजार सकता है। हम उधरवाले कमरे में चला जाअेगा...ठीक है....ठीक है हम लोग तो आज सिर्फ़ सोना चाहते हैं, गहरी नींद। और कुछ नहीं।.....चलते चलते उसने सोलंकी से हाथ मिलाया और बोला....पलंग भी आपके लिअे है... ठीक है.....और वह जोर से हंसा- मुबारक, डाक बंगले की रात मुबारक"[1]। यह सब तिलक के बर्दाश्त के बाहर था और वह सोच रहा था कि उसको वापस पहलगाम लौट जाना चाहिअे।

तिलक जब लिद्दरवट के डाकबंगले से चलने के लिअे तैयार हो जाता है, तो अिरा उसका हाथ पकड़ लेती है और जानना चाहती है कि तिलक की उसके बारे में क्या राय है? खुद अिरा अपनी सारी हकीकत तिलक से कह देती है। वास्तव में अिरा की ज़िन्दगी बगैर मंजिलों के चलती रही। वह अेक मुसाफ़िर जो ठहरी। उसका पड़ाव कहीं भी नहीं है। वह आज तक चलती ही रही है। अिरा की ज़िन्दगी की त्रासदी सिर्फ़ यही है कि, उसको सिर्फ़ निरर्थक प्यार ही मिला। जो भी उसकी ज़िन्दगी में आया, उसने उसके साथ प्यार का खिलवाड़ किया। उस दिन सूनी घाटी में चट्टान पर बैठे बैठे अिरा ने अपनी कहानी तिलक को सुनायी थी। उसने सच्चाअी बयान की थी।

जो भी आदमी अिरा के जीवन में आया उससे वह यही कहती रही....... "मेरे जीवन में तुम्हारे सिवा और कोअी नहीं आया आज तक।"[2] वह उस आदमी को अपना सब कुछ बता देती और उम्मीद

रखती कि वह शिरा की सारी खामियों के साथ जीवन भर साथ देगा। मगर ऐसा कभी नहीं हुआ। शिरा हमेशा अकेली ही रही। शुरुको बड़े जबरदस्त सदमें पहुँचे। लेकिन शुरुकी अेक यह कमजोरी रही है कि वह आदमी के सिवा किसी को प्यार नहीं कर सकती.....शिसलिअे झूठ भी बोल नहीं पाती।

तिलक शिरा की अेक अेक याद यहाँ पर पेश कर रहा है। शुन दिनों शिरा कालेज में पढ़ा करती थी। तभी शुरुको अपने शरीर का अहसास हुआ था। देखनेवालों की निगाहें शिरुकी ओर मुड़ जाती और वह कुछ डर भी जाती। शुरुने कअी तरह के सपने सजा रखे थे। तब हर हमशुम्र लड़का शुरुको राजकुमार ही लगता और वह आँखें चुराचुराकर हर लड़के की ओर देखा करती। शुरुका अेक भगवान भी था,जो नीले आसमान के शुपर रहता था। वह शिरा की हर बात को देखता और नोट करता था। शुन्हीं दिनों शुरुने अेक नाटक भी लिखा था - सपनों का राजकुमार। कालेज की पत्रिका में वह छप गया था। कालेज गैदरिंग के अवसर पर वह खेला भी गया था। शुसमें स्वयं शिरा ने राजकुमारी का रोल निभाया था और शुरुकी अेक सहेली ने राजकुमार की भूमिका निभायी थी। वह दिन याद करते करते शिरा का रोम रोम पुलकित हो जाता है।

शिरा सच्चे राजकुमार के शिंतजार में बैठी हुअी थी। कभी वह सपनों के राजकुमार का स्पर्श महसूस करती। तब शुरुके सारे शरीर में गुदगुदी होने लगती। कभी वह रो लेती, कभी बेसुध सी सोअी रहती। शिरा की माँ नहीं थी। नौकरानियों के हाथों ही शुरुकी परवरिश हो रही थी। शुरुके पिताजी आर्मी में थे।

कालेज की पढ़ाअी खत्म करने के बाद शिरा युनिवेरसिटी में पढ़ने

लगी थी। साथ साथ उसनेनाटकों में अभिनय करना भी शुरू किया था। उन्हीं दिनों शिमला के एक नाटक - स्मारोह में एक व्यक्ति से, अिरा की मुलाक़ात हुअी थी - विमल से। वह वास्तव में अिराका ही सहपाठी था। दोनों अेक दूसरे को चाहने भी लगे थे। जब विमल ने उसे जीवन में पहली बार छुआ था, तब उसका रोम रोम सिंहर उठा था। वैसी सिहरन अिरा ने फिर कभी महसूस नहीं की।

विमलने उसे विश्वास दिलाया था - "अिरा हम तुम दोनों रंगमंच के लिअे समर्पित हैं। हम जीवन भर अिसी में लगे रहेंगे।"[३] मगर अिरा के अिस विश्वास को उसके पिताजी समझ नहीं पाये थे। वे अिरा का नाटकों में करना बिलकुल पसन्द नहीं करते थे। वह साल अिरा की पढ़ाअी का आखरी साल था। उसको दिल्ली ड्रामा कॉम्पटीशन जाने से उसके पिताजी ने मना कर दिया था। अेनमें अिस बात को लेकर अनबन भी हुअी थी। विमल को तो वह वचन दे चुकी थी। मगर उसके पिताजी अपनी राय पर अड़िग रहे। आखिर पिताजी की मर्जी के खिलाफ उसने कॉम्पटीशन में हिस्सा ले लिया। पिताजी से उसका रिश्ता टूट गया था। अिधर विमल और अिरा दोनों दो साल तक दिल्ली में स्थायी रंगमंच स्थापित करने की जी तोड़ कोशिश करते रहे। मगर हाथ आयी सिर्फ नाकामयाबी और निराशा तथा कर्ज़। दोनों पैसे के लिअे मोहताज़ बन गअे। आखिर दोनों में दूरिया पैदा हो गयीं। अब अिरा लौटकर पिताजी के पास भी नहीं जा सकती थी। कोअी रास्ता अिरा के सामने नहीं था।

आखिर विमलने किसीसे कहलवाकर अिरा की नौकरी का प्रबन्ध कर दिया। बतरा साहब के फ्लैट में उसको नौकरी मिल गयी थी। काम था सिर्फ "टेलीफोन कालस अटेण्ड करना"। अिसके लिअे अिरा को चार सौ रुपये

तनख्वाह मिलती थी। वैसे बतरा शराब का बेहद शौकीन आदमी था। आगे चलकर अिरा को अुसकी शराफ़त पर शक होने लगा। अेक दिन बतराने अुसको अेक तस्वीर दिखाते हुअे कह दिया.... 'यह मेरे पंजाब की तस्वीर है।.....तुमसे भी बहुत मिलती जुलती है।'[४] अुस समय अिरा ने कोअी जवाब नहीं दिया। दिन योंही गुजरते गअे।

अिधर विमल के दिल में बतरा के प्रति शक बढ़ता जा रहा था। अिसी बीच वह बेतरह टूट गया था। अुसका व्यवहार रूखा-सा जान पड़ता था। विमल का शक अिस हद तक बढ जाता है कि अिरा और विमल में लड़ाअी भी होती है। अुसके शक को खत्म करने के लिअे बतरा की नौकरी छोड़ देने का अिरा सोच लेती। मगर भूखों मरने की नौबत का खयाल आते ही वह विचार छोड़ देती। अिस दौरान अिरा के पिताजी ने दो बच्चोंवाली अेक खूबसूरत विधवा से शादी भी कर ली थी। विमल की अुदासी बढ़ती जा रही थी। अुसके सारे सपने खाक में मिल गये थे। और अचानक अेक दिन विवश बन कर विमल बम्बअी चला गया। विमल के चले जाने के बाद अिरा और भी अकेली बन गअी थी। मगर अकेली रहना अुसके बस की बात नहीं थी। किसी न किसी आदमी का सहारा तो अुसे चाहिअे था। तभी तो वह तिलक से कह देती है... ''पर तिलक। यह तुम्हारी दुनिया बहुत कमीनी है। यहाँ औरत बगैर आदमी के रह ही नहीं सकती।.....चाहे अुसके साथ अुसका पति हो, या भाअी या बाप। कोअी न हो तो नौकर ही हो। पर आदमी की छाया जरूर चाहिअे''।.....अिसलिअे हर लड़की अेक कवच ढूँढती है.... वह चाहे पति का हो, भाअी या बाप का किसी रूठे रिश्तेदार का। अिस कवच के नीचे वह अच्छा बुरा हर तरह का जीवन बिता सकती है। अुसे पहने के लिअे जैसे अेक साड़ी चाहिअे वैसेही यह कवच भी चाहिअे।'' विमल के जाते ही मैं

नंगी हो गअी थी।....

तिलक वह पहला आदमी है जिससे अिरा अपने मन की बातें कह रही थीं। अिरा अपने अकेलेपन को तोड़ने के लिअे तिलक से सबकुछ कहती जा रही है। तिलकके पूछने पर कि सोलंकी को कैसी जानती हो ? अिराने जवाब दिया था...सोलंकी से मेरी पहली मुलाक़ात, वहीं बतरा के साथ अेक बार हुअी थी, वोल्गा होटल में। .....वैसे बतरा के बारे मेंभी अिरा बहुत कुछ जानती थी। वह क्लबों में रातें गुजारने का बेहद शौकीन था। अुसका अेक ही पेशा था - सरकारी अफ़सरों से दोस्तियाँ गाठकर व्यापारियों तथा अन्य जरूरतमंदो का काम करवाना।

फिर अचानक अेक नयी बात घटित होती है, वह यह कि शीला नामक अेक औरत से जो कि बतरा की बीवी थी, अिरा का परिचय हो जाता है। अुसने आते ही बतरा के घर को अेकदम बदल दिया था। शीला के आते ही घरमें अेक नयी रौनक आयी थी। मगर जैसे शीला अचानक आयी थी, वैसे अचानक जा रही थी.... जाते वक्त अुसने सिर्फ अितनाही कहा....
"फिर आअूँगी। मुलाकात होगी। जरा खयाल रखना बतरा का।"

अेक दिन बतराने शीला के बारे में सारी कहानी अिरा को बता दी थी। वास्तवमें बतरा औरशीला अेक दूसरे को प्यार करने लगे थे, मगर जब दंगा हुआ तब दोनों अेक दूसरे से बिछूड गअे। शीला ने किसी और आदमी से विवाह भी कर लिया। और आज जब तिलक से अुसकी मुलाकात हुअी तो अुसके साथ भी विवाह करने को तैयार हो जाती है। अेक दिन शीला और अिरा का भी परिचय हो जाता है। फिर कुछ दिनों बाद शीला अिरा को बतरा के यहाँ से नौकरी से हटा देती है। बतराके साथ अिरा का रहना

शीला बर्दाश्त नहीं कर सकी। उसने अिरा की नौकरी से छुट्टी कर दी। उस वक्त अिरा बहुत रो पड़ी थी। शीला से कहती भी तो क्या कहती ? अब उसकी ज़िन्दगी में क्या रह गया था ? वह नितान्त अकेली रह गअी थी। अिरा रात के अंधेरे में पड़ी रो रही थी। झुंझलाहट में उसने सारा सामान बिखेर दिया और शीशा भी तोड़ दिया।

मगर तमाम सारी बेवफ़ाअियों के बावजूद हर आदमी अिरा को मासूम लगने लगता। यहाँतक कि तिलक की मासूमियत भी अिरा को प्यारी लगने लगती है। वास्तव में जो भी अिसकी ज़िन्दगी में आया उसने घुमा फिराकर हमेशा यही जानने की कोशिश की कि उसने पहले किसी से प्यार तो नहीं किया। पुरुष के लिअे यही सबसे बड़ी तसल्ली रहती है। और अिराने अपने हर प्रेमी से यही कहा -- .... "तुम मेरी ज़िन्दगी में पहले हो, प्रथम हो।" यह खूबसूरत फ़रेब अिरा करती रही। वह हर पुरुष से यही चाहती रही कि वह अुसको अपना अंतिम प्यार दे। अुसके बाद अुसकी ज़िन्दगी में कोअी न हो।

अिरा अपनी सहेली दमयन्ती के पास नागपुर चली जाना चाहती थी, मगर बतराने ही अुसको रोक लिया था। अिरा को नौकरी दिलाने मे बतरा का ही हाथ था, मगर अिरा को यह मालूम नहीं था। और अगर अुसको यह मालूम होता कि यह नौकरी बतरा की वजह से ही मिल रही है, तो शायद वह अिसके लिअे कतअी तैयार नहीं हो पाती।

अिरा अपने जीवन की अेक अेक घटना बताती जा रही थी। अैसे ही अचानक डा.चन्द्रमोहन अुसके जीवन में आया था। अुसके बच्चों को पढाने का काम अिरा करती थी। अभी चार महीने भी नहीं हुअे थे कि अुसको डा.

चन्द्रमोहन के अनुरोध पर डिब्रुगढ़ जाना पड़ा। जब डाक्टर ने अुसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखा तो अिराने अुसका अस्वीकार किया। डाक्टर की अुम्र पचपन साल की थी और बोलते वक्त अुनके मुँह से झाग निकला करता था। अुसके पास पैसे के सिवा कुछ भी नहीं था। अिरा अुसके बच्चों की परवरिश किया करती थी और अेक दिन वह भी आया कि दोनों ने शिलांग में शादी भी कर ली। शादी के पहले डाक्टर ने अुसको छुआ नहीं था। शादी के बाद पहली रात में अुसने अपना थरथराता हाथ अिरा की कमर में डाला था। अुस वक्त अिरा अैसा महसूस करने लगी मानो मरा हुआ साँप अुसकी कमर को चिपक गया हो। जब अुसने अुसके होठों को चुमा तो अिरा को लगा जैसे अुसने मेंढ़क पर अपने होंठ रखे हुअे हो। डाक्टर अिरा को सताअे जा रहा था। अुस रोज पहली अिरा मर चुकी थी। अिरा ज़िन्दा दफ़न हो गयी थी।

डाक्टर और अिरा में कभी कभी छेड़खानी भी होती। कभी डाक्टर अपनी गलती के लिअे अिरा की माफी मांगता और फिर अिरा के दिल में अुसके प्रति करुणा पैदा हो जाती। कुछ दिनों बाद अिरा वहाँ पर खुद को तनहा महसूस करने लगी तो डाक्टर ने अुसके दिल बहलाव के लिअे कुत्तों के पिल्लों का अिंतजाम भी कर दिया था। मगर आखिर अिरा अेक दिन डाक्टर से कहकर अपनी सहेली के पास नागपुर चली आअी। लेकिन नागपुर आकर भी वह राहत की सांस नहीं ले सकी। नागपुर आने के कुछ ही दिनों बाद अुसको डाक्टर के बीमार रहने का तार मिला। तार मिलते ही वह फ़ौरन डिब्रुगढ़ चली गयी। वहीं अेक हॉस्पीटल में डाक्टर बेहोशी की हालत में पड़ा हुआ था। और आखिर अुसने दम तोड़ ही दिया। अुस वक्त अिरा फूट फूट कर रो पड़ी थी। डाक्टर को किसी विद्रोही ने गोली मार देने से ही अुनकी मौत

हुअी थी और डाक्टर की वह रट..... '' अब जैसा तुम चाहो '' अिरा को बार सुनायी पड़ रही थी। डिब्रनगढ से लौटते समय डाक्टर की बहन ने अिरा को पच्चीस हजार का कागज सौंप दिया जो डाक्टर ने ही अिरा के नाम कर दिया था ताकि अुसको भविष्य में किसी बात की दिक्कत न हो। सचमुच डाक्टर बड़ा समझदार था।

डाक्टर की मृत्यु के बाद अिराके जीवन को अेक नया मोड़ मिल गया था। वह सारी कहानी अिराने तिलक को बता दी थी। तिलक जब अुसके सामने विवाह कर लेने का प्रस्ताव रखता है, तो वह जवाब देती है कि जिसको अुसने अपनी सारी कहानी कह दी है, अुसके साथ वह कदापि विवाह नहीं कर सकती।

तिलक, सोलंकी और अिरा डाकबंगले से कोल्हाअी घूमने के लिअे चले गअे थे, मगर तिलक अचानक कोल्हाअी की बर्फीली तराअियों में खो गया। बड़ी मुश्किल से वह बच पाया और आखिर तीनों अेक दूसरे से मिल पाअे। डाक्टर की मृत्यु के बाद अिरा को दर दर की ठोकरें खानी पड़ी थीं। कभी कभी अुसे विमल की यादें भी परेशान करतीं। तीन साल के लम्बे अंतराल में अिरा के जीवन में नये नये मोड़ आते रहे। कभी अुसने स्कूल में मास्टरनी की, कभी किसी फर्म में रिसेप्शनिष्ट का काम किया, कभी किसी कम्पनी में सेल्स गर्ल का काम किया। सोलंकी, तिलक और अिरा, तीनों पहलगाम से लौटे पडे थे। मगर अिरा की ज़िद के कारण विमल और सोलंकी को वहीं आडू के डाक बंगले में छोड आना पड़ा। अिसी दौरान दमयन्ती का अेक खत भी अुसको मिला था जिसमें विमल के बीमार रहने का जिक्र था। वह अुससे मिलने जाती है मगर विमल की बीमारी और भी बढ़ जाती है और बेचारा विमल अेक दिन अिस संसार से विदा लेता है। अुसके बाद अिरा अकेली रह जाती है।

तिलक श्रीनगर चला जाता है। अिसी बीच सोलंकी ही अिरा से कभी कभी मिलता रहता है। आखिर अिरा अेक दिन नौकरी के सिलसिलेमें चण्डिगढ आती है। तिलक से वह कह देती है, वह कहीं नौकरी करेगी। तिलक अुसको विदा देने के लिअे रेल स्टेशन जाता है। रेल छूटते वक्त अिरा खिड़कीपर भी नहीं आयी। अिसका तिलक को बहुत दुःख है। लौटते समय भी अिरा तिलक से कुछ नही कहती। गाड़ी चली जाती है। अब तो तिलक को सिर्फ अितना ही मालूम हो कि या तो अिरा चण्डिगढ में नौकरी करती होगी या कहीं और चली गयी होगी।

पात्र और चरित्र चित्रण

कमलेश्वरजी का 'डाक बंगला' वास्तव में अेक चरित्र प्रधान लघु-अुपन्यास है। यह लघु-अुपन्यास नायिका प्रधान रहा है। अिसकी नायिका है - अिरा। पुरुष पात्रों में - तिलक, सोलंकी, बतरा, विमल और डाक्टर चन्द्रमोहन आ जाते हैं। अिनमें भी शुरु से आखिर तक दो ही पात्र रहा करते हैं - तिलक और सोलंकी। और अिनमें भी अेक अैसा पात्र है जिसके सामने अिरा अपनी सारी दास्तान खोलकर रख देती है। अिन पात्रों की अपनी चरित्रगत मौलिक विशेषताअें रही हैं।

अिरा - 'डाकबंगला' नायिका प्रधान लघु-अुपन्यास है। या यों कहा जाअे कि अिस लघु-अुपन्यास की बागडोर अिरा के हाथ में ही है। सारी कहानी अुसी के अिर्द गिर्द घूमती रहती है। अिरा वास्तव में विधुरा थी अुसके पति डाक्टर थे, जिनकी किसी विद्रोही की गोली लग जाने से मौत हो चुकी थी। तब से अुसे कभी चैन नहीं मिला। अुसने अपने जीवन में चार पुरुषों से प्रेम किया - सोलंकी, बतरा, विमल और डाक्टर चन्द्रमोहन। लेकिन अुनमें

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

से किसी अेकने भी अुसे अंतिम प्यार नहीं दिया जिसके लिअे वह ज़िन्दगी भर तडपती रही।

अिरा वास्तव में अेक खूबसूरत युवती थी। अुसने अेम्.अे. भी किया था। वह बाहर से जितनी नि:संकोच, मुक्त, निर्बन्ध थी अन्दरसे भी अुतनीही संकोचशील, परम्परानुरागी और मीरन थी। अुसके होठोंपर हमेशा मादक सूखापन रहा करता था। अुसको नाटको में काम करने में ज्यादा दिलचस्पी थी। कालेज-जीवन में अुसने अेक नाटक भी लिखा था - 'सपनों का राजकुमार'। और स्वयं अिराने अुसमें राजकुमारी का रोल भी निभाया था। अिरा सारा जीवन नाकामयाबी से परिपूर्ण रहा है। अुसकी ज़िन्दगी में कहीं भी पड़ाव नहीं है। अपने जीवन में अुसने तरह तरह के काम किअे। मगर अुसको कहीं भी चैन नहीं मिल पाया। अुसकी अंतिम प्यार पानेकी तड़पन को कमलेश्वरजी ने बखूबी के साथ प्रस्तुत किया है। अुन्होंने अिरा के मानसमंथन को ही वरियता दी है। कमलेश्वरजी ने अिरा कोप्रस्तुत लघु-अुपन्यास में दार्शनिकता के साथ प्रस्तुत किया है। वह जब भी बात करती है, तो दार्शनिक बातें ही करती रहती हैं। जैसे ..... "बहुत देखा है और बहुत सहा है मैंने तिलक। लोग आत्मा की बात करते हैं; पर तन पर अेकान्तिक अधिकार चाहते हैं - अैसा अधिकार जो अुनकी वासना की घड़ी के मुताबिक चलता है....आज मैं किसी के लिअे निहायत बुरी औरत हो सकती हूँ तिलक। पर अगर अुसीको अपना तन दे दूँ तो बहुत अच्छी हो जाअूँगी। चार दिन बाद वह मुझसे छिटककर अलग जा सकता है, पर फिर कभी मुझे बुरा नहीं कहेगा। बल्कि अपने अहं में चूर होकर दया देने की कोशिश करेगा वह मेरा मसीहा बनने की कोशिश करेगा क्यों कि तुम्हारे समाज में हर आदमी कुछ करने आता है और हर औरत कुछ भोगने आती है। अिसिलिअे हर क्वांरी माँ की कोखसे तुम्हारे प्यार भरे पापों ने

जबरदस्ती संताने पैदा की हैं और उन संतानों को तुमने पैगम्बरों का दर्जा दिया है।''[६]

तिलक - 'डाक बंगला' लघु उपन्यास का पुरुष पात्रों में प्रमुख पात्र है। कश्मीर यात्रा के दौरान उसका शिरा से परिचय हो जाता है। और देखते देखते यह परिचय काफ़ी निकटता प्राप्त करता है। वह शिरा की सारी कहानी सुन लेता है और आखिरतक उसका साथ देता है। वह उसको प्यार भी करने लगता है। एक लम्बे अंतराल के बाद जब वह शिरा के समक्ष विवाह कर लेने का प्रस्ताव रखता है, तो शिरा साफ़ इन्कार करती है। क्योंकि जिसको उसने अपना सबकुछ दे दिया है, उसके साथ वह विवाह नहीं कर पायेगी। लघु-उपन्यास के आखिर में जब शिरा चण्डीगढ चलने के लिये तैयार हो जाती है, तो तिलक भी उसको विदा देने के लिये रेल स्टेशन जाता है, मगर शिरा तिलक से बात नहीं करती। कोई जवाब भी नहीं देती। और तिलक बेमनसे वहाँ से लौट पड़ता है। शिराका बिना कुछ कहे चले जाना तिलक के अंतर को झकझोरता है।

सोलंकी - सोलंकी भी शिरा का प्रेमी रहा है। वह भी उसके साथ लघु-उपन्यास के आखिर तक साथ रहता है। उसकी हर जरूरत पूरी करता है। उसकी परवरिश भी करता है। कमलेश्वरजी ने उसके शरीर का वर्णन इस प्रकार किया है - ''रूखे मोटे मोटे बाल, पुष्ट भरा हुआ शरीर। मोटे मोटे पर साफ तराशें होंठ। कनपटियों पर मांसलता कुछ अधिक उसके मुँहकी खाल खुरदरा थी। उसकी कोचले की कहीन कनियों सी बढी हुई दाढी और मूंछे थे। उसके नथुनो में भी बाल थे, जो सांस लेते वक्त हिला करते थे। उसके कान के लबोंपर भी काले रेशे थे।[७] मेजर सोलंकी शराब का आदती था। वह हमेशा

घोड़ा दौडाता रहता है। अेक फ़ौजी आदमी के साथ अनबन करके वह डाकबंगले में आिरा, तिलक और अपने लिअे जगह का अिंतजाम कर लेता है। सोलंकी भी आिरा को अपना अंतिम प्यार नहीं दे पाता।

विमल - विमल भी आिरा के जीवन में तब आया जब वह अेम.अे. में पढ रही थी। वह वास्तव में आिरा का सहपाठी था। अुसको भी नाटकों से बेहद लगाव था। दोनों अेकदूसरे को चाहते थे। शिमला में नाटक समारोह के दौरान दोनों की पहली मुलाक़ात हुअी थी। अुस दिन जीवन में पहली बार विमल ने आिरा को छुआ था। तब आिरा रोमांचित हो अुठी थी। विमलने अुसको विश्वास दिलाया था - "आिरा, हम-तुम दोनों रंगमंच के लिअे समर्पित है। हम जीवनभर अिसी में लगे रहेंगे।" दिल्ली ड्रामा कैम्पटीशन में विमल आिरा के साथ शरीक़ था। और अिसके बाद दो सालतक वह आिरा के साथ दिल्ली में ही स्थायी रंगमंच स्थापित करने की कोशिश में रहा। लेकिन अुसके हाथ आयी सिर्फ़ नाकामयाबी। वह हताश बन जाता है। अपने मित्र बतरा से कहकर वह आिरा की नौकरी का अिंतजाम कर देता है। आखिर आिरा का साथ छोड़कर विमल बम्बअी चला जाता है। वह भी आिरा को अपना अंतिम प्यार नहीं दे सका। विमल को आखिर अेक भयानक बीमारी लग जाती है। अिसी में ही वह दम तोड़ देता है। अुसकी मौत के बाद भी अुसका प्यार आिरा भूल नहीं पाती।

बतरा - बतरा भी आिरा का प्रेमी रहा है। अुसका अपना अेक फ्लैट था। अुसका और कोअी नहीं था। बतरा विधुर था और अुसकी कनपटियोंके बाल कुछ सफेद हो रहे थे। अुसकी अुम्र लगभग चालीस वर्ष की थी। अुसकी आँखो में अेक करुणा सी दीख पडती थी। अुसके होठों पर हमेशा शालीनता की मुस्कराहट रहा करती थी। वैसे तो वह दिखने में काफ़ी शरीफ़ था। आिराको

उसने अपने यहाँ नौकरी दे दी थी। वह शराब का भी ज्यादा शौकीन था। संगीत का भी उसे शौक था। शीला नाम की उसकी एक प्रेमिका भी थी, जो कुछ दिन बतरा के पास रहा करती, तो कुछ दिन किसी और के पास। एक रात बतरा इरा को शीला की कहानी बता देता है। यही वो शीला है, जिसने इरा को नौकरी से हटाकर ज़लील किया था। बतरा का पेशा था - एक खूबसूरत बंगला रखना, एक कार रखना, फोन रखना, और क्लबों में रातें गुजारना। सरकारी अफसरों से दोस्तियाँ बनाकर व्यापारियों तथा अन्य जरूरतमन्दों का काम करवाना उसका पेशा था। सैक्रेटरीयों की बीवियों और प्रेमिकाओं से भी उसके अच्छे सम्बन्ध थे। वह लोगों की कमजोरियों को अच्छी तरह जानता था।

कथोपकथन - 'डाक बंगला' लघु उपन्यास के कथोपकथन अत्यन्त मार्मिक बन पड़े है। उनके द्वारा पात्रों के चरित्रों पर प्रकाश डाला है गया है, तो दूसरी तरफ उनके द्वारा कथावस्तु सीधे ढंग से विकसित होती हुई अपने परमोत्कर्ष पर पहुँचती है। उदा -

- .... कुछ देर बाद इराने बेसाख्ता पूछा था -
- तुम मुझे कैसी औरत समझते हो ?
- कैसी भी नहीं ।
- बताओ तिलक। जो कुछ मन में हो, कह डालो। मैं श्रीनगर और पहलगाम में रहते हुए हमेशा यही अन्दाज़ लगाने की कोशिश करती रही कि तुम मुझे किस रूप में लेते हो ? मुझे क्या समझते हो - मेरे बारे में क्या क्या खयाल रखते हो ?
- तो फिर क्या समझ में आया ?
- यही मैं तुमसे जानना चाहता हूँ।
- मैं क्या बताऊँ ?

- क्यों ? औरतों के बारे में बताने के लिये आदमियों के पास कुछ न कुछ हमेशा रहता है।
- ताकि कोल्हाओं चलना है। अगर सोओगे नहीं तो चलना नहीं हो पाओगा, आओ चलें।
- न मैं सोओंगी न तुम्हें सोने दूँगी, यहीं बैठेंगे हम।
- मैं समझता हूँ तुम्हारा जितना अधिकार मुझ पर नहीं है।
- तिलक। अधिकार मिल जाने पर तुम लोग हमेशा झूठ बोलते हो, फ़रेब करते हो। जब तक अधिकार नहीं मिलता तभी तुम लोग होश की बात करते हो।·····

अिरा के कथोपकथन अत्यन्त मार्मिक बन पड़े हैं। कहीं कहीं वे मर्म पर गहरी चोट करते हैं। औरत की मजबूरी के बारे में, अुसके ये विचार मर्म पर कड़ा प्रहार करते हैं।

·····" पर तिलक। यह तुम्हारी दुनिया बहुत कमीनी है। यहाँ औरत बगैर आदमी के रह ही नहीं सकती।···· चाहे अुसके साथ अुसका पति हो, या भाओी कोओी न हो तो नौकर ही हो। पर आदमी की छाया जरूर चाहिअे। यह विधान कैसा है ? तुम अिसे नहीं समझ सकते क्योंकि तुम औरत नहीं हो। पर मैंने बड़ी गहराओी से यह महसूस किया है। किसी भी आदमी की आड़ में - चाहे वह आदमी काठका ही हो····अच्छी से अच्छी और बुरी से बुरी ज़िन्दगी शान से चल सकती है, पर बगैर आदमी के यह न अच्छी ज़िन्दगी जी सकती है, और न बुरी।····अिसलिअे हर लड़की अेक कवच ढूँढती है - वह चाहे पतिका हो, भाओी या बाप या किसी झूठे रिश्तेदार का। अिस कवच के नीचे व अच्छा बुरा हर तरह का जीवन बिता सकती है। अुसे पहनने के लिअे अेक साड़ी चाहिअे, वैसे ही यह कवच भी चाहिअे।

वातावरण - कमलेश्वरजी के लघु-अुपन्यास वैसे वातावरण प्रधान ही रहे हैं। वातावरण की पृष्ठभूमि पर वे अपने पात्रों को चित्रित करते हैं। वातावरण का हूबहू चित्रांकन करने में कमलेश्वरजी सिध्दहस्त हैं। वातावरण के जरिअे वे अेक अेक चित्र प्रस्तुत करते हुअे आगे बढ़ते हैं। अुदा॰ -........

"पहलगाम से आड़ू का रास्ता। बायें लिद्दर बह रही है और दायें पहला पठार घास फूलों से ढ़का है। अुसकी कमर पर से पतला रास्ता जा रहा है। जगह जगह घनी कँटीली झाडियां हैं।पत्थरों की अुभरी हुअी रेखा, अुस पतले रास्ते की दिशा बता रही हैं। नदी का शोर घोड़े की टापों के साथ जैसे पार्श्व संगीत का काम कर रहा है.....लिद्दर की धार में लकड़ी के लठ्ठे बहते हुअे चले आ रहे हैं।.......मंडराते, चकराते और सीधी धार में हैं। शीशे की सतह पर फिसलते से.....नीचे जाते हैं, दृश्य हैं, और चट्टानों से टकराती धार है.....अुड़ते हुअे गल पक्षियों की पंक्ति है।....मौन खड़े वन है।"[१०]

वातावरण चित्रण के अंतर्गत सौंदर्यबोध का चित्रण करने में भी कमलेश्वरजी कुशल है। अुदा॰- ......"नीली झील का पानी छिटक रहा था। जब मैं ने अपने होंठ अिरा के जूड़े के नीचे रख दिअे थे और घुले हुअे केशों की भीगी भीगी ठंडक पलकों से आँखों में अुतर गअी थी, तब अिरा की पलकें नम हो आअीं और अुसके भीतर हुअी बरसात का भीगापन पूरे शरीर के रंध्र रंध्र में समा गया था....पीठ की मांसल चट्टान गीली हो आअी थी....ब्लाअुज की किनारियों से चिपक गयी थीं। ओंठ घुले घुले से हो गअे थे.... बालों के अुडते हुअे रेशमी रोअें माथे और कनपटियों पर चिपक गअे थे और वह जैसे बारिश में नहायी हुअी खड़ी थी.....और जैसे बरसात में नहाकर खारापन आता है, वैसा ही मादक खारा स्वाद ओठों पर रिसकर रह गया था।..."[११]

भाषा-शैली - भाषा की दृष्टिसे भी कमलेश्वरजी का यह लघु-अुपन्यास अत्यन्त प्रौढ अुपन्यास कहा जा सकता है। अिसकी भाषा में सम्प्रेषण शक्ति जबरदस्त है। भाषा पात्रों के भावों के अनुकूल ही बन पड़ी है। अिसमें चित्रात्मकता भी सहज लक्षित होती है। कमलेश्वरजी ने शब्दों का चयन भी कुशलता के साथ किया है। भाषा में अुर्दु और अंग्रेजी शब्दों की भरमार दिखाअी देती है। अुदा :-

अंग्रेजी शब्द - ड्रामा, ट्रान्सफर, सेट, मिस्टर, रिहर्सल , व्हिस्की, कैम्पिटीशन, कॉटेज, होस्टल आदि।

अुर्दु शब्द - बावजूद, दीवानापन, बारिश, खतरनाक, ज़िन्दगी, सदमा, अिम्तहान, निहायत, बरदाश्त, रिश्तेदार, मासूम, आदमी, रहम, औरत, तमाम आदि।

'डाक बंगला' भाषा की दृष्टि से अेक श्रेष्ठ लघु-अुपन्यास है। अिसकी भाषा अत्यन्त प्रभावपूर्ण और स्वाभाविक बन पड़ी है। अुसमें अेक तरह की ज़िन्दादिली नजर आती है।

अिसकी शैली भी प्रवाहपूर्ण और अितिवृत्तात्मक बन पड़ी है। अुसमें कहीं भी अवरोध नहीं है।

अुद्देश्य - 'डाक बंगला' के जरिये कमलेश्वर जी ने 'अिरा' नामकी युवती की त्रासदी दिखाने की भरसक कोशिश की है। बेचारी अिरा ज़िन्दगीभर अंतिम प्यार पाने के लिये तड़पती रही। मगर अुसकी ज़िन्दगी में जो भी आया, अुसने अुसके साथ प्यार का खिलवाड़ ही किया। वैसे अिराने अपनी ज़िन्दगी में चार लोगों से प्यार किया। मगर अिनमें भी प्यार किया सिर्फ विमल से ही। बाकी लोगों के प्रति अुसके दिल में प्यार से ज्यादा करुणा ही पैदा

हुअी है। जो चार लोग अिरा की ज़िन्दगी में आअे, वे है - मेजर सोलंकी, तिलक, विमल, बतरा और डाक्टर चन्द्रमोहन। अधेड़ डाक्टर के साथ अिराने विवाह कर लिया था मजबूरी की खातिर। मगर अफ़सोस की बात तो यह है कि आगे चलकर डाक्टर की किसी विद्रोही की गोली लग जाने से मौत हो जाती है। अुसका आखरी सहारा भी टूट जाता है। अिरा ज़िन्दगीभर दर - दर की ठोंकरे खाती रही। तमाम सारी मुश्किलों को सहती रही, लेकिन आखिर तक अुसको वह नहीं मिला पाया, जो अिरा चाहती थी।

'डाक बंगला' में कमलेश्वरजी ने अिरा की चारित्रिक विशेषताओं को अुजागर करने का प्रयास किया है। अितना ही अुन्होंने अिरा को दार्शनिकता भी प्रदान की है। अुसके कथोपकथनों से अिस बात का काफी पुष्ट प्रमाण मिलता है।

'' 'डाक बंगला' अुपन्यास में अिरा के माध्यम से नैतिक और सामाजिक मान्यताओं के बीच टकराहट को दिखाया है, जो विश्वसनीयता के अभावों को अधिक प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करता है। यह संघर्ष अथवा व्दंव्द ज़िन्दगी का, मनुष्य के लिअे मनुष्य का जो रूप दिखाता है, वह सहज लगता है''[१२]।....

टिप्पणियाँ

१. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ - २३

२. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ - ३०

३. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ ३३

४. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ - ४०

५. कमलेश्वर - डाकबंगला
पृष्ठ - ४६

६. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ - ४७

७. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ -

८. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ - ३३

९. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ - ४६

१०. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ - ६

११. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ - ५०

१२. कमलेश्वर - डाक बंगला
पृष्ठ- २१४.